| क्र.सं. | माह | किये जाने वाले कार्य |
|---|---|---|
| 1. | **जनवरी** (पौष-माघ) | • पुराने बगीचे के पके फलों की तुडाई करें।<br>• 1 वर्ष पुराने बगीचे में प्रति पौधा 250 ग्राम सुपर फास्फेट, 125 ग्राम यूरिया देकर गुड़ाई करें, व सिंचाई करें।<br>• 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें। |
| 2. | **फरवरी** (माघ-फाल्गुन) | • पुराने बगीचे में गौण तत्वों की कमी से अनेक विकार पैदा हो जाते है। अतः माईक्रो न्यूट्रेंट का पौधों पर छिड़काव करें। (सूक्ष्म तत्व पैकेट पर बताए गये निर्देशानुसार पानी के साथ मिलाकर)<br>• 20 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।<br>• मुख्य तने पर 2 फिट ऊँचाई तक नई निकली टहनियों को हटाते रहे।<br>• पके फलों को बाजार भेजकर विक्रय करें। |
| 3. | **मार्च** (फाल्गुन-चैत्र) | • 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।<br>• नये बगीचे में दो लाइनों के बीच में रिक्त स्थान पर सब्जियों की फसल लेने का कार्यक्रम बनाए।<br>• पके फलों का विक्रय करें।<br>• साइट्रस सिल्ला (पत्तियाँ सिकुडना) कीट रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस दवा 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।<br>• केंकर रोग निवारण हेतु 3 ग्राम कॉपर आक्सीक्लोराइड प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। |
| 4. | **अप्रेल** (चैत्र-वैशाख) | • नये बगीचे लगाने हेतु चयनित खेतों में 4.5 x 4.5 Mtr. दुरी पर निशान लगाकर खड्डे खोदने का कार्य प्रारंभ करें। खड्डा साईज 1x1x1 mtr. रखें।<br>• नये स्थापित बगीचे के पौधों को धूप से बचायें।<br>• नये स्थापित बगीचे में सप्ताह में 1 बार पानी पिलायें।<br>• एक वर्ष पुराने बगीचे में प्रति पौधा 50 ग्राम यूरिया देकर गुड़ाई करें।<br>• मुख्य तने के जमीन से 2 फिट ऊँचाई तक निकली शाखाओं को हटाते रहें। |
| 5. | **मई** (वैशाख-ज्येष्ठ) | • नये बगीचे लगाने हेतु खोदे गये खड्डों में दीमक उपचार हेतु खड्डे में चारों तरफ तथा अन्दर से निकली मिट्टी पर क्लोरपाइरोफॉस दवा का स्प्रे करें।<br>• खड्डों की प्रति खड्डा 25 किलो गोबर की खाद, 1 किग्रा सुपर फास्फेट अन्दर से निकली मिट्टी के साथ मिलाकर भराई करें।<br>• पुराने बगीचे में सप्ताह में एक बार सिंचाई करें।<br>• नीम्बू की तितली की लटों की रोकथाम हेतु हाथ से बीन कर नष्ट करें। |
| 6. | **जून** (ज्येष्ठ-आषाढ़) | • प्रति सप्ताह पिलाई करें।<br>• जहाँ नये बगीचे की तैयारी चल रही है और खड्डों की भराई नहीं हुई है वहाँ भराई का कार्य पूर्ण करावें।<br>• एक वर्ष पुराने बगीचे में प्रति पौधा 50 ग्राम यूरिया पौधे से दूर - दूर देकर पिलाई करावें। |
| 7. | **जुलाई** (आषाढ़-सावन) | • नीम्बू के स्वस्थ पौधों की व्यवस्था करें।<br>• नये बगीचे में 2-3 अच्छी बारिश होने पर खड्डे के मध्य के पौधा लगाऐं।<br>• सिंचाई की व्यवस्था हेतु नालियाँ बनायें तथा पौधे के चारों तरफ थावला बनायें। |
| 8. | **अगस्त** (सावन-भाद्रपद) | • आवश्यकता पड़ने पर सिंचाई करें।<br>• जहाँ पौधे बुवाई का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है वहाँ बुवाई करावे।<br>• लीफ माइनर तथा सिट्रस सिल्ला कीट रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस दवा का 1.5 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। |
| 9. | **सितम्बर** (भाद्रपद-अश्विन) | • आवश्यकतानुसार सिंचाई करावे।<br>• पौधे के नीचे मुख्य तने से निकली अतिरिक्त टहनियों को हटावें।<br>• बगीचे में लाइनों के मध्य रिक्त स्थान पर सब्जियों की खेती करने का कार्यक्रम बनाऐं। |
| 10. | **अक्टूबर** (अश्विन-कार्तिक) | • छोटे पौधों की 10 दिन के अन्तराल से सिंचाई करें।<br>• थावलों में खरपतवार निकालें व गुड़ाई करें।<br>• सिट्रस सिल्ला व लीफ माईनर कीट से बचाव हेतु मोनोक्रोटोफॉस दवा 1.5 मि.ली. प्रतिलीटर पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें। |
| 11. | **नवम्बर** (कार्तिक-मार्गशीर्ष) | • पौधों की 15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।<br>• पुराने पौधों में केंकर बीमारी की रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड व स्ट्रेप्टोसाईकीन दवा का पानी के साथ मिलाकर स्प्रे करें।<br>• थावले में गुड़ाई करें व खरपतवार निकालें। |
| 12. | **दिसम्बर** (मार्गशीर्ष-पौष) | • पौधों की 20 दिन में एक बार सिंचाई करें। |

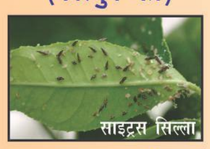
साइट्रस सिल्ला

साइट्रस केंकर

4.5 मी. की दूरी पर गड्डे

निम्बू की तितली की लट

नये पौधे

थावले का निर्माण

लीफ माइनर के लक्षण

अतिरिक्त टहनियों की कटाई

खरपतवार की सफाई

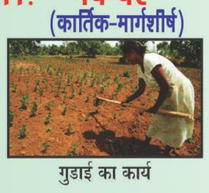
गुडाई का कार्य

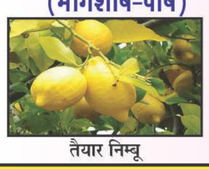
तैयार निम्बू

सौजन्य : TDF, नाबार्ड, जयपुर ● प्रकाशक : गायत्री सेवा संस्थान, उदयपुर